डॉ0 राम मनोहर लोहिया की दृष्टि में स्त्री

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डी0 एस0 एम0 राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

डॉ0 राममनोहर लोहिया समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन हेतु आधुनिक जन–राजनीति के साथ–साथ एक सांस्कृतिक माडल बनाने के प्रति सदैव तत्पर रहे। जिसका प्रारूप ऐसा हो, जिसमें पारंपरिक संस्कृति के मानवतावादी और बौद्धिक तत्त्व एक साथ समाहित हों। देश की जड़ता से उनका आशय धार्मिकता के आवरण में पैठी साम्प्रदायिकता और जाति व्यवस्था से भी था, जो एक खास तरीके से धर्म–प्रभुत्व की द्योतक थी। डॉ0 लोहिया की दृष्टि में 20वीं सदी की वास्तविक विसंगति उसकी कल्पनातीत क्रूरताओं और इन क्रूरताओं के विरूद्ध विभिन्न मोर्चों पर हो रहे संघर्षों–क्रांतियों में निहित थी। इसी कारण पूर्व–पश्चिम के ऐतिहासिक संघर्षों से प्रेरणा ग्रहण करके समता के 11 सूत्री कार्यक्रम और सप्तक्रांति के सूत्र दिये। ये सूत्रबद्ध कार्यक्रम 21वीं सदी के तमाम अन्तर्विरोधों का शमन करके समताबद्ध समाज की कल्पना में सहायक हैं क्योंकि इससें विकास की वह सीढ़ी निर्मित होती है जहाँ भेदभाव, पक्षपात, विद्वेष, असमानता आदि का नामोनिशान नहीं रहता। डॉ0 राममनोहर लोहिया के ''11 सूत्री कार्यक्रम''[1] इस प्रकार हैं–1.सभी प्राथमिक शिक्षा समान स्तर और ढंग की हो तथा स्कूल का खर्चा और अध्यापकों की तनख्वाह एक जैसी हो। प्राथमिक शिक्षा के सभी विशेष स्कूल बन्द किये जाएं। 2. अलाभकर जोतों से लगान अथवा मालगुजारी खत्म हो। 3. पाँच या सात वर्ष की ऐसी योजना बनाना जिससे सभी खेतों को सिंचाई का पानी मिल सके। चाहें यह पानी मुफ्त मिले या किसी ऐसी दर पर या कर्ज पर कि जिससे हर किसान अपने खेत के लिए पानी ले सकें। 4.अंग्रेजी भाषा का माध्यम सार्वजनिक जीवन के हर अंग से हटे। 5. हजार रूपये महीने से अधिक खर्चा कोई व्यक्ति न कर सके। 6. अगले बीस वर्ष के लिए मुसाफिरी के लिए केवल एक दर्जा हो। 7. अगले बीस वर्षों के लिए मोटर कारखानों की कुल संख्या बस, मशीन–हल अथवा टैक्सी बनाने के लिए इस्तेमाल हो और कोई निजी इस्तेमाल की गाड़ी न बने। 8. एक ही फसल के अनाज के दाम का उतार–चढ़ाव 20 प्रतिशत के अंदर हो और जरूरी इस्तेमाल की उद्योगी चीजों के बिक्री दाम लागत खर्च के डेढ़ गुना से ज्यादा न हों। 9. पिछड़े समूहों यानी आदिवासी, हरिजन, औरतें, हिन्दू तथा अहिन्दू जातियों को 60 प्रतिशत का विशेष अवसर मिले। 10. दो मकानों से ज्यादा मकानी मल्कियत का राष्ट्रीयकरण किया जाए। 11. जमीन का असरदार बँटवारा और उसके दामों पर नियंत्रण।

हॉलाकि स्वतंत्रता के पश्चात् इन कार्यक्रमों का राष्ट्रीय स्तर पर कोई बहुत ध्यान किसी भी राज्य की पार्टियों ने नहीं किया क्योंकि इस बात से लगता है कि इक्कीसवीं सदी में अब सब देश और सभी पार्टियाँ पूँजीवाद का उग्रतम रूप भूमंडलीकरण की गिरफ्त में है। ''यहाँ तक कि अपने को साम्यवादी कहने वाले देश और पार्टियाँ भी भूमंडलीकरण में मार्क्स को ढूँढ़ने की कोशिश कर रही हैं। अंग्रेजी भाषा में शिक्षित–दीक्षित और इसी भाषा में फीडबैक प्राप्त करने वाले बुद्धिजीवी समाजवाद का उल्लेख केवल व्यंग्य में ही करते हैं। इस व्यवस्था के खिलाफ जो कुछ असहमति के स्वर सुनाई देते हैं उनमें भी जोर इस व्यवस्था

में कुछ सुधार करने पर रहता है, न कि इसके स्थान पर समाजवादी व्यवस्था लाने पर। भूमंडलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, बाजार–व्यवस्था, बाजार द्वारा निर्धारित नैतिकता आदि बातों पर एक आम सहमति बनी दिखाई देती है। सरकार जनता के पैसों से निर्माण करे, कारखाने लगाए, हवाई अड्डे और सड़कें बनाए, परिवहन और संचार का मूल ढाँचा तैयार करे और फिर रखरखाव तथा प्रबंध के बहाने उसे प्राइवेट कंपनियों को सौंप दें, ताकि कंपनियाँ डटकर मुनाफा कमाएँ और जिस जनता का पैसा लगा है वह उन सुविधाओं से वंचित हो जाए, इस व्यवस्था का औचित्य सिद्ध करने के लिए बुद्धिजीवियों की ओर से तरह–तरह की दलीलें दी जा रहीं हैं। समाज में समता की बांत करने वालों को मूर्ख समझा जाता है।''[2]

डॉ0 राम मनोहर लोहिया का मानना था कि ''स्त्री समाज के उत्पीड़न और दमन की रवायत उतनी ही पुरानी है जितनी यह सभ्यता। संसार में जितने भी प्रकार के अन्याय इस पृथ्वी को विषाक्त कर रहें हैं। उनमें से सबसे बड़ा अन्याय नर और नारी के भेद का है। संसार की विशाल मानवता किसी न किसी रूप में समता की इच्छुक तो हैं लेकिन आधी से ज्यादा मानवता नारी की स्वतंत्रता के प्रति उदासीन है। आज भी अधिकतर स्त्रियों को सामूहिक जीवन में पुरूष के बराबर भाग लेने का अधिकार नहीं है'...संसार की गरीबी के खिलाफ चाहें कितनी लड़ाईयाँ लड़ी जायें वह उस समय तक सफलता प्राप्त नहीं कर सकती जब तक कि समाज में नारी को उसका मौलिक अधिकार नहीं दिया जाएगा। इतना ही नहीं इस तथ्य की गहरी व्याख्या करते हुए संसार में अनेक प्रकार के भेदों से जाति भेद और नर–नारी भेद को सबसे ज्यादा खतरनाक बताया है। भारतीय संदर्भ में भी उनका मत बड़ा ही स्पष्ट था कि–भारत की आत्मिक शक्ति में इतनी गिरावट का मुख्य कारण जाति प्रथा और नारी वंचन है। क्योंकि बिना स्त्री की भागीदारी के सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक आन्दोलन को आगे बढ़ाया नहीं जा सकता। उन्हीं के शब्दों में कहें तो–सामाजवादी आन्दोलन में यदि स्त्रियाँ भाग नहीं लेती हैं या उनको भाग लेने का अवसर नहीं दिया जाता है तो यह सारा आन्दोलन बिना वधू के विवाह जैसा लगेगा।''[3]

सामाजिक परिवर्तन के लिहाज से डॉ0 राम मनोहर लोहिया की दो धारणायें सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। एक पिछड़ी जातियों की राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने की कोशिश और दूसरे नर–नारी संबंधों में समता स्थापित करने का प्रयास। डॉ0 लोहिया स्त्री के दुख को जानते थे, जानते ही नहीं थे, अनुभव भी करते थे। यह आकस्मिक नहीं है कि उन्होंने वर्ण व्यवस्था के भीतर स्त्री को 'पाँचवा वर्ण' कहा और वर्ण व्यवस्था को परम्परा का 'नासूर' बताते हुए समाज के भीतर सबसे ज्यादा वंचित दलित और स्त्री को माना, अर्थात् मुक्ति मार्ग के लिए दलित और स्त्री का निर्धारण एक साथ किया। उनका कहना था कि, ''जब तक शूद्रों, हरिजनों और स्त्रियों की सोयी हुई आत्मा का जगना देख कर उसी तरह खुशी नहीं होगी जिस तरह किसान को बीज का अंकुर फूटते देख कर होती है, और उसी तरह जतन तथा मेहनत से उसे फूलने–फलने और बढ़ाने की कोशिश न होगी, तब तक हिन्दुस्तान में कोई भी वाद, किसी तरह की नयी जान, लायी न जा सकेगी।''[4]

डॉ0 राममनोहर लोहिया ने भी कहा था कि, ''औरत को किस तरह की आजादी देना चाहते हो। मैं तो बिल्कुल गोली की तरह जवाब दे दूँगा। मेरा जवाब है कि मैं औरत को उस हद तक आजादी देना चाहता हूँ जितनी कि मर्द को देना चाहता हूँ।''[5]

प्रसंगतः डॉ0 राममनोहर लोहिया के द्वारा दिये गये स्त्री–मुक्ति संबंधी विचार इस वैश्विक युग में कारगर साबित हो सकते हैं। नामवर सिंह ने भी यह स्वीकार किया है कि, ''लोहिया पश्चिम

के नारी मुक्ति आन्दोलन से काफी पहले इस तरह का आन्दोलन चला चुके थे और वह स्त्री और पुरूष की बराबरी की बात करते थे। जहाँ तुलसी जैसे संत कवि नारी के प्रति हिन्दू समाज में व्याप्त विचार से उबर नहीं सके, वहीं लोहिया लोकमानस को कामयाब करने में कामयाब रहे। शायद लोहिया के प्रभाव के चलते ही हिन्दी में किसी कवि ने लिखा था–एक नहीं दो–दो मात्रा, नर से भारी है नारी।''[6]

डॉ0 राममनोहर लोहियों ने सटीक निष्कर्ष निकाला कि–मनुस्मृति, वर्णाश्रम व्यवस्था, धर्म–कर्म काण्ड आधुनिक सभ्यता में मनुष्य की समता, स्वाधीनता के रास्ते में बड़े बाधक तत्त्व हैं। बिना इनसे निपटे हम नये समाज का निर्माण नहीं कर सकते हैं। परम्परा के नाम पर ये सभी व्यवस्थाएँ स्त्री– विरोधी और स्त्री की निजी दुनिया के खिलाफ हैं। वर्तमानकाल की बात की जाए तो, ''हमारे समय में बहुत सारे साहित्यिक खासतौर से लेखिकाएँ जो स्त्री विमर्श में डूबी हुईं हैं उनकी निगाह स्त्री दमन, अत्याचार–अभाव, आत्मपीड़ा इत्यादि की ओर ज्यादा है, पर उनकी निगाहों में वह व्याप्ति नहीं दिखाई देती जो डॉ0 लोहिया की पुतली में व्याप्त है। डॉ0 लोहिया पहले ऐसे विचारक ठहरते हैं, जो घरेलू–कामगार स्त्रियों की दैनंदिन यातनाओं को न सिर्फ महसूस करते हैं बल्कि बेलौस व्यक्त करते है।'' आपके द्वारा संसद में 2.8.1966 को संबोधित शब्दों में कहें कि, ''मर्द के मुकाबले एक औरत घर में ज्यादा देर रहती है, बाहर नहीं निकती है तो कम से कम प्रधानमंत्री इतना करायें कि फर्श से लेकर छत तक धुँआ निकलने के लिए नाली या चिमनी का इंतजाम किया जाये जिससे औरतों की आँखे बचें, इसके अलावा पानी निकालने या दूर ले जाने में बहुत तकलीफ होती है।....जहाँ तक अन्न का संबंध है, यह सही है कि सभी भूखे मरते हैं लेकिन औरतों और बच्चों पर यह आफत ज्यादा आती है।''[7] इतना ही नहीं वह कहते हैं कि–सम्पूर्ण भारतवर्ष कष्टों में रहता है, इसमें से दस में तीन पुरूष और ग्यारह में से आठ स्त्रियाँ अंत में खाती हैं, जब सबको खिला लेती हैं तब। संपन्न परिवारों में कोई तकलीफ नहीं है किन्तु निर्धन परिवारों में स्त्रियों को अधिक कष्ट सहन करना पड़ता है। साधारणतः वैसे भी चीजें कम रहती हैं। अगर अतिथि आ गये तो परिवार की स्त्री को बचा–खुचा खाकर रहना पड़ता है या भूखे ही रहना पड़ता है।

प्रसंगतः डॉ0 राममनोहर लोहिया द्रोपदी के माध्यम से एक तरफ परंपरा को पुनर्मूल्यांकित करते हैं, तो दूसरी तरफ इस विलक्षण व्यक्तित्व के माध्यम से भारतीय आधुनिकता का एक मॉडल प्रस्तुत करके तमाम ज्ञात–अज्ञात पहलुओं की जो मीमांसा करते हैं वह अभूतपूर्व है। लोहिया के शब्दों में कहें तब उनका कहना था कि, ''जब मैं कहा करता हूँ कि द्रौपदी हिन्दुस्तान की सच्चे माने में प्रतीक है सावित्री उसके जितने नहीं, तब इसी अंग को देखकर कहता हूँ कि वह ज्ञानी समझदार, बहादुर, हिम्मतवाली हाजिर जवाब थी। न सिर्फ हिन्दुस्तान में बल्कि दुनिया में मुझे द्रौपदी जैसी कोई औरत नहीं मिली। अगर दुनिया वाला किस्सा लम्बा–चौड़ा हो अपने हिन्दुस्तान में तो निश्चित है कि उससे ज्यादा 'बड़ी औरत' कोई नहीं है। केवल पतिव्रत धर्म के कारण सावित्री को उतना सिर पर उठा लिया करते हो यह तो बड़ी अनुचित चीज है। यह दिखाता है कि हम लोगों का दिमाग कितना कूढ़ मगज हो गया है। मूढ़ हो गया है मर्द के हितों की रक्षा करने वाला हो गया है।.....एकायक यह जुमला कि द्रौपदी प्रतीक है, सुनते ही कुछ लोगों को चटपटा लगता है, कुछ तबियत मचल भी उठती है। कुछ लोगों को शायद उलझन हो जाती है कि यह क्या वाहीयात बात कही गयी है। लेकिन वास्तव में इस जुमले के पीछे हिन्दू और हिन्दुस्तानी कहानियों के सार को लेकर दिमागी पुनर्गठन की यह बात है।''[8] डॉ0 लोहिया नारी को मुक्त करने की वकालत करते हुए कहते हैं कि–नारी को गठरी नहीं बनाना है परन्तु नारी को इतना स्वयं

काबिल होना चाहिए कि वक्त पर पुरूष की गठरी अपने साथ ले सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शरद ओंकार (संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996, पृष्ठ–143
2. सिंघवी लक्ष्मीमल्ल–साहित्य अमृत, संपादक,अक्टूबर 2007, वर्ष 13, अंक 3,पृष्ठ–19
3. कथाक्रम–डॉ0 लोहिया–मार्क्स, गाँधी, सोशलिज्म–अक्टूबर–जून 2011
4. लोहिया डॉ0 राममनोहर–राममनोहर लोहिया–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009,पृष्ठ–23
5. लोहिया डॉ0 राममनोहर–राममनोहर लोहिया–इतिहास चक्र, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण : 2008,पृष्ठ–62
6. सिंह डॉ0 नामवर द्वारा मार्च 2010 को नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में दिये गये वक्तव्य पर आधारित
7. त्रिपाठी अरविन्द–स्त्री मुक्ति : लोहिया की आवाज कथा क्रम, अप्रैल–जून 2011,पृष्ठ–40
8. 8. शरद ओंकार (संपादक)–राममनोहर लोहिया–लोहिया के विचार–लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, छठवाँ संस्करण : 2008,पृष्ठ–286